Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC)

हिन्दी साहित्य

प्रश्नपत्र–2 (खंड–क)

पद्य साहित्य (भाग–1)

'मध्यकालीन कविता'

- कबीरदास
- मलिक मुहम्मद जायसी
- सूरदास
- तुलसीदास
- बिहारी

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

Code: CSHL05

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC)

हिन्दी साहित्य

प्रश्नपत्र–2 (खण्ड–क)

पद्य साहित्य (भाग–1)

'मध्यकालीन कविता'

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष: 011-47532596, 87501 87501
टोल फ्री : **1800-121-6260**
Web: www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिये निम्नलिखित पेज को "like" करें
www.facebook.com/drishtithevisionfoundation
www.twitter.com/drishtiias

UPSC DLP

विषय सूची (Contents)

1. कबीरदास **7–41**

1.1 कबीर का मूल व्यक्तित्व 7

1.2 कबीर का दर्शन 9

1.3 कबीर के दर्शन पर विभिन्न दर्शनों का प्रभाव 10

1.4 कबीर के काव्य में योग और भक्ति का संश्लेषण 12

1.5 कबीर की भक्ति भावना का स्वरूप 14

1.6 कबीर की भक्ति: स्वदेशी या विदेशी 16

1.7 कबीर का रहस्यवाद 18

1.8 कबीर की काव्य भाषा 19

1.9 कबीर की उलटबाँसी 21

1.10 गुरुदेव को अंग, विरह को अंग तथा सुमिरन को अंग 22

1.11 कबीर के बीजक में शामिल प्रमुख काव्यरूप (साखी, सबद, रमैनी इत्यादि) 24

1.12 व्याख्या प्रारूप (कबीर) 27

1.13 कबीर (व्याख्या के लिये महत्वपूर्ण दोहे) 29

2. मलिक मुहम्मद जायसी **42–82**

2.1 पद्मावत की कथा 42

2.2 पद्मावत में इतिहास व कल्पना का समन्वय 48

2.3 पद्मावत में प्रेम तत्व 49

2.4 पद्मावत की प्रेम पद्धति: भारतीय/फारसी 51

2.5 नागमती का विरह वर्णन 52

2.6 क्या नागमती का विरह वर्णन मध्यकालीन नारी की दासता का चित्रण है? 55

2.7 जायसी का रहस्यवाद 55

2.8 जायसी व कबीर के रहस्यवाद की तुलना 56

2.9 पद्मावत: अन्योक्ति या समासोक्ति 57

2.10 क्या पद्मावत महाकाव्य है? 59

2.11 प्रबंध काव्य के रूप में पद्मावत का मूल्यांकन 60
2.12 पद्मावत की प्रबंधात्मकता (भारतीय शैली/मसनवी शैली) 61
2.13 'पद्मावत' में लोकतत्व 63
2.14 'फूल मरै पै मरै न बासू' : जायसी की प्रेम दृष्टि व जीवन दृष्टि 64
2.15 पद्मावत : एक त्रासदी 66
2.16 पद्मावत का शिल्प पक्ष 67
2.17 पद्मावत का कथासार 69
2.18 व्याख्या-1 प्रारूप (जायसी) 70
2.19 व्याख्या-2 प्रारूप (जायसी) 72
2.20 जायसी (व्याख्या के लिये महत्त्वपूर्ण पद) 73

3. सूरदास **83–124**
3.1 सूरदास और उनकी प्रेम पद्धति 83
3.2 भ्रमरगीत : वियोग श्रृंगार 85
3.3 सूरदास के काव्य में सामाजिक पक्ष 88
3.4 सूरदास की भक्ति भावना का दार्शनिक आधार 90
3.5 सूर की कविता में वक्रता और वाग्विदग्धता 92
3.6 सूर की अलंकार योजना 94
3.7 सूरदास की भाषा 96
3.8 भ्रमरगीत की बिंब योजना 98
3.9 शिल्प के अन्य पक्ष 99
3.10 भ्रमर-गीत : उपालम्भ काव्य के रूप में 100
3.11 'भ्रमरगीत' में प्रकृति वर्णन 101
3.12 क्या सूर के उद्धव एक प्रकार से कृष्ण (शासक) एवं गोपियों (प्रजा) के बीच बिचौलिये नेता के प्रतीक हैं। और इस रूप में आज भी उतना ही प्रासंगिक है? 103
3.13 भ्रमरगीतसार में सूर की मौलिक उद्भावनाएँ 104
3.14 भ्रमर-गीत की सूर की परवर्ती परंपरा 106
3.15 व्याख्या प्रारूप (सूरदास) 107
3.16 सूरदास (व्याख्या के लिये महत्त्वपूर्ण पद) 109

4. तुलसीदास **125–170**

4.1 तुलसी की भक्ति पद्धति 125

4.2 तुलसी की भक्ति-भावना का लोकमंगलकारी पक्ष 127

4.3 तुलसी की सामाजिक चेतना 128

4.4 तुलसी के काव्य में कलियुग व रामराज्य की धारणाएँ 132

4.5 तुलसी की समन्वय चेतना 134

4.6 तुलसीदास की काव्य कला या शिल्प पक्ष 137

4.7 कवितावली का काव्य रूप 140

4.8 रामचरितमानस का महाकाव्यत्व 142

4.9 रामचरितमानस : सुन्दरकाण्ड का नामकरण 143

4.10 रामचरितमानस : सुन्दरकाण्ड के कथानक का विवेचन 145

4.11 मानस के सुन्दरकाण्ड तथा पूर्ववर्तीराम-काव्यों के कथानकों का तुलनात्मक अध्ययन 146

4.12 व्याख्या प्रारूप (तुलसी) 147

4.13 सुंदरकांड (रामचरितमानस)– व्याख्या के लिये महत्त्वपूर्ण 148

4.14 उत्तरकांड (कवितावली)- (व्याख्या के लिये महत्त्वपूर्ण) 164

5. बिहारी **171–184**

5.1 बिहारी के काव्य में श्रृंगार पक्ष 171

5.2 बिहारी की भक्ति भावना 172

5.3 बिहारी की सामाजिक चेतना 172

5.4 बिहारी का काव्य शिल्प 174

5.5 सतसई परंपरा में 'बिहारी सतसई' का स्थान 177

5.6 व्याख्या अभ्यास (बिहारी) 178

5.7 व्याख्या हेतु महत्त्वपूर्ण दोहे 179

अध्याय
1

कबीरदास

1.1 कबीर का मूल व्यक्तित्व

कबीर का व्यक्तित्व बहुआयामी है और इसी कारण उनकी समीक्षा करते हुए इस प्रश्न से जूझना पड़ता है कि कबीर के व्यक्तित्व के सभी पक्षों में पारस्परिक संबंध क्या है? आलोचकों का एक वर्ग उन्हें 'संत' मानता है और दावा करता है कि *"कबीर स्वभाव से संत, प्रकृति से उपदेशक और ठोक-पीट कर कवि हो गए हैं।"* दूसरी ओर, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी प्रभृति आलोचक उन्हें मूलत: भक्त मानते हैं तथा शेष सभी पक्षों को भक्त व्यक्तित्व की ही छाया बताते हैं। इस संदर्भ में यह प्रश्न महत्वपूर्ण हो उठता है कि कबीर का मूल व्यक्तित्व कवि का है, समाज सुधारक का है या फिर भक्त का है?

जहाँ तक कबीर के समाज सुधारक होने का प्रश्न है, यह निर्विवाद सत्य है कि वे बुद्ध, गांधी, अम्बेडकर इत्यादि क्रांतिकारी समाज सुधारकों की परम्परा में शामिल होते हैं। एक महान समाज सुधारक की मूल पहचान यह है कि अपने युग की विसंगतियों की पहचान करे, एक मौलिक व समयानुकूल जीवन दृष्टि प्रस्तावित करे और इस जीवन दृष्टि को स्थापित करने के लिए हर प्रकार के भय और लालच से मुक्त होकर दृढ़तापूर्वक संघर्ष करे। कबीर के व्यक्तित्व का विश्लेषण करें तो हम समझ सकते हैं कि वे जिस सामंतवादी युग में थे, वह सामाजिक दृष्टि से अपकर्ष का काल था। विलासिता जैसे मूल्य समाज में फैले हुए थे। नारी को भोग की वस्तु माना जाता था। वर्णव्यवस्था और साम्प्रदायिकता ने मानव समाज को खंडित किया हुआ था। धर्म का आडम्बरकारी रूप वास्तविक धार्मिकता को निगल चुका था और भाषा से लेकर जीवन शैली तक एक प्रकार का आभिजात्य उच्च वर्गों की मानसिकता में बैठा हुआ था। ऐसे समय में कबीर ने मानव मात्र की एकता का सवाल उठाया और स्पष्ट घोषणा की कि *"साईं के सब जीव हैं, कीरी कुंजर दोय।"* वे समाज के प्रति अति गहन संवेदनशीलता से भरे रहे क्योंकि 'सुखिया' संसार खाता और सोता रहा जबकि संसार की वास्तविकता समझकर 'दुखिया' कबीर जागते और रोते रहे। यह संवेदनशीलता निष्क्रिय नहीं थी बल्कि इतनी ज्यादा दृढ़ता और आत्मविश्वास से भरी थी कि बेहतर समाज के निर्माण के लिए कबीर अपना घर फूँकने को पूर्णत: तैयार थे-

"हम घर जारा आपना, लिया मुराड़ा हाथ।
अब घर जारौं तासु का, जो चलै हमारे साथ।।"

समाज के प्रति यही दृष्टिकोण वर्णव्यवस्था, साम्प्रदायिकता, भाषाई आभिजात्य और धार्मिक आडम्बरों के कठोर खंडन में साफ दिखाई पड़ता है। स्पष्ट है कि कबीर महान समाज सुधारक थे।

किन्तु, वे जितने महान समाज सुधारक थे, उतने ही महान कवि भी थे। यह ठीक है कि उन्होंने सचेत होकर या प्रतिज्ञापूर्वक अपनी कविताएँ नहीं लिखीं और कहा भी कि *"जिन तुम जान्यौ गीति हैं, वह निज ब्रह्म विचार।"* उन्होंने तो यहाँ तक माना कि *"मसि कागद छ्वो नहीं, कलम गहि नहिं हाथ।"* इसलिए यदि हम काव्यशास्त्र के पारम्परिक प्रतिमानों की दृष्टि से देखें तो संभवत: उन्हें महान कवि मानने में हिचकिचाहट हो सकती है किन्तु यदि हम यह मानें कि कविता के अनुसार प्रतिमान होना चाहिए न कि प्रतिमानों के अनुसार कविता, तो हम पाते हैं कि कबीर की कविताएँ किसी महाकवि की ही कविताएँ हैं। हठयोग की शब्दावली और उपदेशात्मकता से भरे प्रसंगों को यदि कुछ क्षण के लिए अलग रख दें तो उनकी समाज संबंधी कविताएँ और ईश्वर मिलन संबंधी कविताएँ किसी भी सचेत और सजग कवि के लिए ईर्ष्या का विषय हो सकती हैं। सामाजिक कविताओं में उनकी व्यंग्य क्षमता उन्हें हिन्दी साहित्य में सर्वोच्च स्थान प्रदान करती है तो ईश्वर मिलन से संबंधित कविताओं की मधुरता और भावुकता बिहारी जैसे श्रृंगारिक कवियों की कविताओं पर भी भारी पड़ती है। शिल्प की दृष्टि से देखें तो वे 'वाणी के डिक्टेटर' तो हैं ही, अन्य काव्यशास्त्रीय उपादानों के प्रति गहरी उदासीनता बरतने के बाद भी उनका स्वाभाविक प्रयोग अत्यंत खूबसूरती से करते हैं।

अभ्यास हेतु प्रश्न

1. "कबीर की कविता "अस्वीकार" के साथ-साथ स्वीकार की भी कविता है।" इस कथन के संदर्भ में कबीर काव्य का विश्लेषण कीजिये। **U.P.S.C. (Mains) 2017**
2. 'भक्ति-आन्दोलन का जन-साधारण पर जितना व्यापक प्रभाव हुआ, उतना किसी अन्य आन्दोलन का नहीं' इस कथन की सार्थकता पर विचार करते हुए कबीर की भूमिका पर प्रकाश डालिए। **U.P.S.C. (Mains) 2016**
3. क्या कबीर ने अनीश्वरत्व के निकट पहुँच चुके भारतीय जनमानस को निर्गुण ब्रह्म की भक्ति की ओर प्रवृत्त होने की उत्तेजना प्रदान की? तर्कसम्मत उत्तर दीजिये। **U.P.S.C. (Mains) 2014**
4. "कबीर जनता के कवि थे और जनता के प्रति उनके हृदय में असीम करुणा और अनुराग का भाव था।" इस कथन की सोदाहरण समीक्षा कीजिये। **U.P.S.C. (Mains) 2013**
5. "कबीर की कविता में प्रेम केवल संवेदना ही नहीं, अवधारणा के रूप में भी है। वह केवल राम के विरह का ही नहीं, कवि के सामाजिक विवेक का भी प्रतिमान है"- इस कथन की पुष्टि कीजिये। **U.P.S.C. (Mains) 2012**
6. "कबीर की भाषा सधुक्कड़ी थी"- इस कथन के औचित्य पर सोदाहरण विचार कीजिये। **U.P.S.C. (Mains) 2011**
7. "सामंती समाज की जड़ता को तोड़ने का जैसा प्रयास कबीर ने किया वैसा प्रयास कोई दूसरा नहीं कर सका।" - इस कथन के आधार पर कबीर के कृतित्व का सोदाहरण मूल्यांकन कीजिये। **U.P.S.C. (Mains) 2007**
8. वर्तमान सामाजिक संदर्भों में कबीर के काव्य की प्रासंगिकता पर विचार कीजिये। **U.P.S.C. (Mains) 2002**
9. "कबीर शास्त्रीय ज्ञान की अपेक्षा अनुभव-ज्ञान को अधिक महत्त्व देते थे।" इस मत की समीक्षा कीजिये। **U.P.S.C. (Mains) 2000**

अध्याय
2

मलिक मुहम्मद जायसी

2.1 पद्मावत की कथा

पद्मावत 57 खण्डों में विभक्त रचना है जिसके रचनाकार प्रसिद्ध कवि मलिक मुहम्मद जायसी हैं। कथा के सभी खंडों का सारांश इस प्रकार है-

1. **स्तुति खंड**- प्रथम खंड का आरम्भ जायसी ने जगत के रचनाकार 'ईश्वर' की स्तुति से किया है। इसके बाद उन्होंने पैगम्बर मुहम्मद और उनके चार मित्रों (खलीफाओं) का वर्णन किया है। तत्पश्चात् उन्होंने तत्कालीन शासक शेरशाह के रूप, गुण आदि का वर्णन करते हुए अपनी गुरु-परम्परा का चित्रण किया है। अंततः कवि ने अपना जीवन-वृत्त बताते हुए अपने चार मित्रों का उल्लेख किया है और कृति के रचनास्थल और काल के साथ-साथ पद्मावत की कथा का सारांश भी प्रस्तुत किया है।
2. **सिंहलद्वीप-वर्णन खंड**- द्वितीय खंड में कवि ने सिंहलद्वीप (पद्मावती की जन्मस्थली) को सातों द्वीपों में सर्वश्रेष्ठ बताते हुए वहाँ की नारियों का वर्णन पद्मिनी जाति की नारियों के रूप में किया है। सिंहलद्वीप का शासक गन्धर्वसेन है जिसका वैभव स्वर्ग के समान बताया गयाहै।
3. **जन्म खंड**- इस खंड में गन्धर्वसेन की रानी चम्पावती के गर्भ से पद्मावती के जन्म लेने की कथा है। इस सुन्दरी कन्या का नाम पद्मावती रखा जाता है। फिर बताया गया है कि बारह वर्षीया पद्मावती के साथ एक चतुर तोता रहता था, जिसका नाम हीरामन था। वह तोते के साथ धर्म तथा जीवन के प्रश्नों पर चर्चा करती थी। पद्मावती युवती हो चुकी थी किंतु गंधर्वसेन ने उसका विवाह नहीं किया क्योंकि वह अपने बराबर किसी को नहीं मानता था। पद्मावती अपना विवाह न होने की पीड़ा हीरामन से कहती थी जिसका राजा को पता चल गया। उसने यह समझा कि हीरामन तोता पद्मावती को इस प्रकार की अनुचित बातें सिखाता रहता है। इसलिए उसने हीरामन तोते को मारने की आज्ञा दी। पद्मावती द्वारा छिपा लेने के कारण हीरामन बच तो गया किंतु वह बेचैनी महसूस करने के कारण वहाँ से चले जाने की इच्छा व्यक्त करने लगा। पद्मावती के आग्रह के कारण वह वहाँ से जा नसका।
4. **मानसरोदक खंड**- एक बार पूर्णमासी के अवसर पर पद्मावती अपनी समवयस्का सहेलियों के साथ मानसरोवर में स्नान करने गई। पद्मावती के अनिंद्य सौंदर्य को देखकर सरोवर भी मोहित हो गया। पद्मावती को साक्षी बनाकर सखियाँ जल में एक खेल खेलने लगीं जिसकी शर्त यह थी कि जो खेल में हार जाएगी, वह अपना हार देगी। एक सखी उस खेल में प्रवीण न होने के कारण अपना हार खो बैठी और रोने लगी। सब सहेलियों ने डुबकियाँ लगाकर हार को खोजने का प्रयास किया। अंततः पद्मावती के चरण-स्पर्श होते ही स्वयं को धन्य मानते हुए सरोवर ने हार ऊपर तैरा दिया जिसे लेकर सभी प्रसन्न हो गईं।
5. **सुआ-खंड**- पद्मावती अपनी सखियों के साथ उछल कूद में लगी हुई थी कि मौके का फायदा उठाकर हीरामन तोता उड़ गया। वन के पक्षियों ने हीरामन का स्वागत-सत्कार किया। कुछ दिनों तक तो वह वन-पक्षियों के साथ आनन्दपूर्वक रहा, किन्तु बाद में एक बहेलिए द्वारा पकड़ लिया गया।
6. **रत्नसेन-जन्म खंड**- प्रस्तुत खंड में रचना के नायक रत्नसेन का चित्तौड़गढ़ के चित्रसेन नामक राजा के यहाँ जन्म लेना दिखाया गया है। पंडितों और ज्योतिषियों ने उसके भविष्य के संबंध में बताया कि यह बड़ा प्रतापी राजा होगा। उन्होंने यह भी बताया कि रत्नसेन योगी बनकर सिंहलद्वीप जाएगा और वहाँ से पद्मावती को विवाह करके चित्तौड़ लाएगा। यह ऐश्वर्य में राजा भोज और बल में विक्रमादित्य के समकक्ष होगा।
7. **बनिजारा खंड**- इस खंड में चित्तौड़गढ़ का एक बनजारा व्यापार के लिए सिंहलद्वीप जाते हुए दिखाया गया है। उसके साथ एक गरीब ब्राह्मण भी वहाँ गया। वह किसी से थोड़ा-सा-कर्ज ले गया था किंतु वह सिंहलद्वीप के हाट में से कुछ भी नहीं खरीद सका। तभी वह बहेलिया हीरामन को लेकर आया और ब्राह्मण ने हीरामन को ही खरीद लिया। इस समय तक रत्नसेन चित्तौड़ का राजा बन चुका था। जब उसे पता लगा कि सिंहलद्वीप से आए व्यापारी कई बहुमूल्य

अध्याय
3

सूरदास

3.1 सूरदास और उनकी प्रेम पद्धति

सूरदास प्रेम के कवि हैं। सूरकाव्य का मूल आधार श्रृंगार और वात्सल्य हैं। उन्होंने बालक कृष्ण की चंचल क्रीड़ाओं और युवा कृष्ण के श्रृंगार के सजीले चित्रों की एक पूरी प्रदर्शनी ही संजो दी है। निस्संदेह उन्होंने अपने आराध्य श्रीकृष्ण के व्यक्तित्व के कतिपय विशिष्ट पक्षों के भीतर ही झाँका है किन्तु इन दोनों पक्षों में से कुछ भी ऐसा नहीं रहा जो उनकी कविता का हिस्सा न बना हो। सूरदास भावनाओं के कवि थे, उन्हें मानवीय भावों की पूरी और सही पहचान थी।

सूरदास के प्रेम-पक्ष के अन्तर्गत वात्सल्य, सख्य और दाम्पत्य तीनों भावों के संयोगात्मक तथा वियोगात्मक वर्णनों की सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है। भगवद्विषयक रति अर्थात् भक्ति के संदर्भ में ध्यातव्य है कि सूर साहित्य में दोनों भावों के आलंबन कृष्ण ही हैं, अतः उनकी भक्ति व प्रेम में कोई तात्विक भेद नहीं है।

(क) वात्सल्यः सूरदास वात्सल्य क्षेत्र के सम्राट हैं। उनके बाल चित्रण में छोटी से छोटी बात भी नहीं छूटी है। उन्होंने कृष्ण की बालसुलभ चेष्टाओं का सूक्ष्मातिसूक्ष्म निरीक्षण किया है। श्रृंगार वर्णन की भांति उनका वात्सल्य वर्णन भी सांगोपांग है। वर्णन की स्वाभाविकता उनके वात्सल्य पक्ष की विशेषता है। उनसे पूर्व वात्सल्य केवल एक भाव था किन्तु सूरदास ने वात्सल्य को रस की कोटि प्रदान करवाने का महत्वपूर्ण कार्य किया।

सूर के संयोग वात्सल्य के प्रमुख अंग निम्नलिखित हैं-

(i) रूप वर्णन
(ii) क्रीड़ा, चेष्टा, मुद्राओं का वर्णन
(iii) बाल स्वभाव का वर्णन
(iv) संस्कारों का वर्णन
(v) मातृहृदय का प्रकाशन

बाल चेष्टा के स्वाभाविक मनोहर चित्रों का इतना बड़ा भण्डार और कहीं नहीं है जितना सूरसागर में है। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं-

"सोभित कर नवनीत लिए।
घुटरुनि चलत रेनु तन मंडित, मुख दधि लेप किये।"
"मैया कबहिं बढ़ैगी चोटी?
किती बार मोहिं दूध पियत भई, यह अजहूँ है छोटी।"

सूर ने वात्सल्य के वियोग पक्ष के अन्तर्गत यशोदा और नन्द की मानसिक पीड़ा का विवेचन किया है। सूर-सागर में वियोग का आरम्भ ही वात्सल्य के वियोग-पक्ष से हुआ है। श्रीकृष्ण जब अक्रूर के साथ मथुरा चले गये और अतिशय प्रतीक्षा के बाद भी नहीं आए तो यशोदा दुखित मन से अपने पति नंद को फटकारती हैं-

"नंद ब्रज लीजै ठोकि बजाय।
देहु बिदा मिलि जाहिं मधुपुरी जहँ गोकुल के राय।"
"यद्यपि मन समुझावत लोग।
सूल होत नवनीत देखि मेरे, मोहन के मुख जोग।"

मातृ हृदय का प्रकाशन सूर ने जिस तन्मयता से किया है, यह विस्मित कर देने वाली है। आलोचक मानते हैं कि सूर स्वयं 'यशोदा' बनकर मातृ हृदय का प्रकाशन कर रहे हैं। आचार्य शुक्ल कहते हैं- *"ऐसा लगता है कि यशोदा, यशोदा न रहीं मानो सूर हो गईं और सूर, सूर न रहे, यशोदा हो गए।"* आचार्य द्विवेदी भी सूर के इस गुण पर मोहित होकर कहते हैं- *"हम बाल-लीला से भी बढ़कर जो गुण सूरदास में पाते हैं, वह है उनका मातृ-हृदय-चित्रण। माता के कोमल हृदय में पैठने की अद्भुत-शक्ति है इस अन्धे में।"*

अध्याय
4

तुलसीदास

4.1 तुलसी की भक्ति पद्धति

तुलसीदास राम भक्ति काव्यधारा के सर्वाधिक प्रतिष्ठित कवि हैं। इनकी भक्ति पद्धति को निम्नलिखित विश्लेषण से समझा जा सकता है–

(क) दास्य भक्तिः तुलसी नवधा भक्ति में से जिसे मूलतः स्वीकार करते हैं, वह है दास्य भक्ति। दास्य भक्ति वह है जिसमें ईश्वर अत्यंत विराट व सर्वशक्तिमान माना जाता है एवं भक्त में लघुता या हीनता का भाव होता है। इस पद्धति में राम श्रद्धेय हैं, प्रेमी नहीं। इसी कारण भक्त में लघुता का बोध होना स्वाभाविक है–

"राम सों बड़ो है कौन, मोसों कौन छोटो।
राम सों खरो है कौन, मोसों कौन खोटो।।"

नवधा भक्ति के अन्तर्गत आने वाले वे सभी स्वर तुलसी के यहाँ मिलते हैं जो दास्य भक्ति के अनुकूल हों। उदाहरण के लिए–

श्रवण–

"जिन्ह हरि कथा सुनी नहिं काना,
श्रवन रंध्र अहिभवन समाना।।"

कीर्तन–

"जो नहिं करै राम गुन गाना,
जीह सो दादुर जीह समाना।।"

आत्मनिवेदन–

"एक भरोसो एक बल, एक आस बिस्वास।
एक राम घनस्याम हित, चातक तुलसीदास।।"

इस प्रकार तुलसी नवधा भक्ति के विविध रूपों को समेटते हुए दास्य भक्ति को केन्द्र में रखते हैं।

(ख) सगुण भक्ति बनाम निर्गुण भक्तिः सगुण व निर्गुण का विवाद तुलसी के समय का एक ज्वलंत विवाद है जिससे बचकर कोई भक्त नहीं रह पाया। तुलसी सगुण भक्त हैं, इसलिये मानते हैं कि जिस राम की वे बात कर रहे हैं, वह दशरथ पुत्र ही हैं। कबीर ने ज़ोर देकर कहा था कि लोग दशरथ पुत्र को पूजते हैं किंतु 'राम' शब्द का वास्तविक मर्म नहीं समझते। तुलसी ने बलपूर्वक जवाब दिया कि उनके राम दशरथ के पुत्र ही हैं–

"जेहि इमि गावहिं वेद बुध, जाहि धरहिं मुनि ध्यान।
सोइ दसरथ सुत भगत हित, कोसलपति भगवान।।"

किंतु, तुलसी सगुण राम के भक्त होते हुए भी समन्वय चेतना से युक्त होने के कारण सगुण व निर्गुण को परस्पर विरोधी नहीं मानते। वे मानते हैं कि भक्ति सर्वजनसुलभ मार्ग है और भक्त किसी की भी पूजा करे, वह मूलतः एक ही ईश्वर की पूजा करता है। वे लिखते हैं –

"अगुनहिं-सगुनहिं नहिं कछु भेदा,
गावहिं मुनि पुरान बुध वेदा।"
"अगुन-सगुन दुइ ब्रह्म सरूपा,
अकथ अगाध अनादि अनूपा।।"

अन्ततः वे निर्गुण व सगुण भक्ति का आंतरिक सम्बंध अवतारवादी धारणा से स्पष्ट करते हैं। वे स्वीकारते हैं कि मूलतः ब्रह्म निर्गुण ही हैं किंतु सज्जनों की पीड़ा हरने के लिए वे अवतार का रूप लेकर पृथ्वी पर आते हैं–

अध्याय
5

बिहारी

5.1 बिहारी के काव्य में शृंगार पक्ष

बिहारी मुख्यत: शृंगार के कवि हैं और इनके अधिकांश छंदों में शृंगार के संयोग व वियोग पक्ष बिखरे हुए हैं। इनके शृंगार की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

1. बिहारी के शृंगार वर्णन में 'देह' की केंद्रीय भूमिका है। रीतिकाल का दरबारी माहौल ऐसे शृंगार की ही परिस्थितियाँ तैयार करता है जिसमें देह की चमक दरबारी रसिकों को आनंदित कर सके। यही कारण है कि बिहारी की कविताओं में बार-बार ऐसे उपमान आते हैं जिनके माध्यम से नायिका के शरीर की चमक का वर्णन अतिशयोक्तिपूर्ण तरीके से किया गया है। उदाहरण के लिये, निम्नलिखित छंद में नायिका का शरीर इतना चमकता-दमकता हुआ बताया गया है कि उसकी उपस्थिति में दीपक जलाने की ज़रूरत ही नहीं है-

   "अंग अंग नग जगमगति, दीपसिखा सी देह,
   दिया बुझाय ह्वै रहौ, बड़ो उजेरो गेह।"

   एक अन्य उदाहरण में वे नायिका की देह की चमक को और अधिक अतिशयोक्तिपूर्ण तरीके से व्यक्त करते हैं। नायिका की चमक का आलम यह है कि उसके घर के आसपास हमेशा पूर्णिमा ही रहती है। अत: पंचांग की मदद से ही तय हो पाता है कि आज कौन सी तिथि है-

   "पतरा ही तिथि पाइए, वा घर के चहुँ पास,
   नित प्रति पून्यौई रहै, आनन ओप उजास।"

2. बिहारी के शृंगार वर्णन की एक महत्वपूर्ण विशेषता उसका 'अनुभाव-केंद्रित' होना है। अनुभाव का संबंध रस सिद्धांत से है। रस-निष्पत्ति की प्रक्रिया के अंतर्गत जब भावक या दर्शक का स्थायी भाव मंच पर जुटाए गए विभावों, अनुभावों और संचारी भावों की क्रिया-प्रतिक्रिया से परिपाक की स्थिति में आता है तो रस की निष्पत्ति होती है।

   अनुभाव और अभिनय समानार्थक शब्द हैं। अनुभाव का अर्थ है, जो मन में भाव उत्पन्न होने के बाद होता है- तात्पर्य यह कि मन में उत्पन्न भावों की अभिव्यक्ति को ही अनुभाव कहा जाता है। अनुभाव दो प्रकार के हैं- यत्नज और अयत्नज। यत्नज अनुभाव वे हैं जो अभिनेता के प्रयत्न से उत्पन्न होते हैं। इसके अंतर्गत-आंगिक (शारीरिक चेष्टाएँ), वाचिक (वाणी द्वारा अभिव्यक्ति) तथा आहार्य (वेशभूषा इत्यादि) अनुभाव शामिल हैं। अनुभावों का दूसरा प्रकार 'अयत्नज' या 'सात्विक अनुभाव' है। जब अभिनेता किसी चरित्र के अभिनय में इतना खो जाता है कि उसे स्वयं के पृथक् होने का बोध नहीं रहता तो भावनाओं के अनुकरण के कारण ये अनुभाव व्यक्त होते हैं, जिन्हें चाहकर या प्रयासपूर्वक व्यक्त नहीं किया जा सकता। सात्विक अनुभावों के प्रमुख उदाहरण हैं- स्वेद, कम्प, अश्रु, मूर्च्छा, जड़ता इत्यादि।

   बिहारी के काव्य में अनुभावों की सघन उपस्थिति के कुछ ठोस कारण हैं। पहली बात है कि उन्हें दरबारी माहौल के भीतर चमत्कार पैदा करना था। चूँकि दरबार के रसिकों में धैर्य की भारी कमी होती है, इसलिये ऐसे माहौल में प्रबंधकाव्य लिखना लगभग असंभव हो जाता है। दरबार की प्रमुख चुनौती यह होती है कि कम से कम शब्दों में, मुक्तक रचना के माध्यम से रसिकों को आह्लादित कैसे किया जाए? इसलिये बिहारी सिर्फ मुक्तक लिखते हैं और उसमें भी सबसे छोटे छंद दोहे का चयन करते हैं। यदि वे इस छोटे से छंद में विभाव पक्ष को लाने का प्रयास करेंगे तो न तो संदर्भ पूरी तरह स्पष्ट होगा और न ही चमत्कार पैदा करने के लिये ज्यादा स्थान बचेगा। इसलिये, वे विभाव पक्ष से बचते हुए सिर्फ अनुभाव पर ध्यान देते हैं। विभाव तथा अन्य सूचनाओं के प्रति वे इतने उदासीन हैं कि पाठक को खुद उन सूचनाओं की कल्पना करनी पड़ती है। इस वजह से उनके छंदों में अनुभावों की सघनता विस्मित कर देती है। उदाहरण के लिये निम्नलिखित दोहे की पहली पंक्ति में सात शब्द हैं और सातों शब्द एक-एक अनुभाव को व्यक्त करते हैं-

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी तथा फ्लोचार्ट का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

DrishtiIAS

YouTube Drishti IAS

drishtiias

drishtithevisionfoundation

641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009
Phones : 011-47532596, +91-8130392354, 813039235456